JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक युग में भारतीय युवा में बदलते नैतिक मूल्य

डॉ. अरविन्द श्रीवास्तव
प्रोफेसर विभागाध्यक्ष
अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय विश्वविद्यालय, जैतवारा
सतना (म.प्र.)

विद्यार्थी जीवन मानव गुणों को अंगीभूत करने का काल है। विद्यर्थी जीवन साधना और तपस्या का जीवन है। यह काल एकाग्रचित होकर अध्ययन और ज्ञान–चिंतन का है। यह काल सांसारिक भटकाव से स्वयं को दूर रखने का काल है। विद्यार्थियों के लिए यह जीवन अपने भावी जीवन को ठोस नींव प्रदान करने का सुनहरा अवसर है। यह चरित्र निर्माण का समय है। यह अपने ज्ञान को सुदृढ़ करने का एक महत्वपूर्ण समय है। वह धौर्य, साहस, ईमानदारी, लगनशीलता, गुरूभक्ति, स्वाभिमान जैसे गुणों को धारण करता हुआ जीवन पथ पर चढ़ता ही चला जाता है।

नैतिक मूल्य! एक तरह से भारतीय संस्कृति की पहचान, पुरखों से विरासत में मिली अनमोल धरोहर है ये। संपूर्ण विश्व में भारत की पहचान का प्रतीक ''नैतिकता'' लेकिन कहते हुए बेहद अफसोस होता है, की आज की हमारी नई एवं आधुनिक पीढ़ी, जिसमें मैं भी आता हूँ, इस बेशकीमती धरोहर को खोती जा रही है, युवाओं का रूष्ट और रूखा व्यवहार, बड़ों के प्रति अनादर, कुतर्क, मनमानी यह सब दर्शाता है कि युवाओं में नैतिक मूल्यों का स्तर किस हद तक गिर चुका है और कितनी अजीब बात है, यह सब कुछ दशकों के छोटे से अन्तराल में हुआ है।

आज से कुछ दशक पूर्व, अपने बड़ों का आदर करना, उन्हें उचित प्रेम देना कर्तव्य माना जाता था, लोग मिलनसार थे, रिश्तों में गर्माहट थी, लेकिन यह कहते हुए भी लज्जा आती है कि जिन बूढ़ें माँ–बाप ने पाल–पोस कर बड़ा किया वही माँ–बाप आज बच्चों पर बोझ हैं। मोबाइल फोन में युवा इतने ध्यान मग्न हैं कि मेल मिलाप के लिए वक्त ही कहाँ ?

और रिश्ते तो आजकल फेसबुक पर बनते हैं तो गर्मजोशी का कोई सवाल ही नहीं उठता सेंवदनहीनता की हद तो इस बात से आंकी जा सकती है कि सड़क पर तड़पते हुए घायल की जान बचाने के बजाय हमारे युवा उसकी दर्दनाक तस्वीर अपने स्मार्ट फोन के कैमरों में कैद करने का ज्यादा प्राथमिकता देते हैं, ताकि उसे फेसबुक पर अपलोड कर सकें और बाकी के युवक संवेदनशीलता का स्वांग रचाते हुए बड़ी फुर्ती से उस पर लाइक और कमेन्ट्स करते हैं। छोटी सी उम्र में ही युवा वह सब कुछ करना चाहते हैं, वह सब कुछ पाना चाहते हैं, जो न ही उनके लिए उचित है और न ही उसका अभी वक्त आया है। धूम्रपान, शराब, पैसा, अय्याशी सब कुछ और वह भी शार्टकट से ऐसे–आराम की मत्वाकांक्षा ऐसी की जब किसी युवाओं से पूछता हूँ ''तुम्हारा सपना क्या है'' ? तो हर बार जवाब मिलता है ''पैसा'' जैसे जीवन में सब कुछ पैसा ही हो, इसके लिए कुछ भी कर गुजरने की ललक उनके चेहरों पर साफ झलकती है।

कैसी विडम्बना है यह ? जिस भूमि पर ''मर्यादा पुरूषोत्तम'' श्री राम और अर्जुन जैसे ''महान शिष्य'' का जन्म हुआ उसी धरा पर आज हर दूसरे क्षण मर्यादा लांघी जा रही है, आये दिन गुरूओं को अपमानित किया जाता है, कितना दुर्भाग्यपूर्ण है। जीवन में ''असफलता तभी आती है जब हम अपने आदर्श, उद्देश्य औश्र सिद्धांत भूल जाते हैं'' और कड़वा सच तो देखिए हमारे आज के युवाओं को तो ''आदर्श'', उद्देश्य'' और ''सिद्धान्त'' का मतलब भी ज्ञात नहीं और उसकी इसी अनैतिकता के चलते हर रोज समाज पतन की नई गहराईयाँ नाप रहा है।

हमारे जीवन में 'अनुशासन' एक ऐसा गुण है, जिसकी आवश्यकता मानव जीवन मेंपग–पग पड़ पड़ती है। अनुशासन ही मनुष्य को एक अच्छा व्यक्ति व एक आदर्श नागरिक बनाता है। अनुशासन का वास्तविक अर्थ अपनी दूषित और दूसरों को हानि पहुंचाने वाली प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करना है। अनुशासन के लिए नियंत्रण की अपेक्षा आत्म–नियंत्रण करना अधिक आवश्यक है। वास्तविक अनुशासन वही है जो कि मानव की आत्मा से सम्बन्ध हो क्योंकि शुद्ध आत्मा कभी भी मानव को अनुचित कार्य करने को प्रोत्साहित नहीं करती।

गुण–अवगुण, अच्छा–बुरा, पुण्य–पाप, धर्म–अधर्म, सब जगह है। विद्यार्थी जीवन में ही इसकी पहचान करनी होती है।, चतुर वह है जो सार ग्रहण कर लेता है।

परिवार अनुशासन की आरम्भिक पाठशला है। अनुशासन का पाठ बचपन से परिवार में रहकर सीखा जाता है। बचपन में समय में अनुशासन सिखाने की जिम्मेदारी माता–पिता तथा गुरूओं की होती है। एक सुशिक्षित और शुद्ध आचारण वाले परिवार का बालक स्वयं ही नेक चाल–चलन और अच्छे आचरण वाला बन जाता है। माता–पिता की आज्ञा का पालन उसे

अनुशासन का प्रथम पाठ पढ़ाता है। परिवार के उपरांत अनुशासित जीवन की शिक्षा देने वाला दूसरा स्थान विद्यालय है। शुद्ध आचरण वाले सुयोग्य गुरूओं के शिष्य अनुशासित आचरण वाले होत हैं। ऐसे विद्यालय में बालक के शरीर, आत्मा और मस्तिष्क का सन्तुलित रूप से विकास होता है।

समय का प्रबन्धन युवाओं के विकास का रास्ता खोलता है विकास की राह में समय की बर्बादी ही सबसे बड़ा शत्रु है। एक बार हाथ से निकला हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। हमारा महत्वपूर्ण वर्तमान क्रमशः भूत हो जाता है। खोई दौलत पुनः कमाई जा सकती है, भूली विद्या पुनः पायी जा सकती है लेकिन खोया समय पुनः वापस नहीं लाया जा सकता है। युवा वर्ग अपने समय का उपयोग कर उच्चतम शिखर पर पहुंच सकते हैं।

अगर ईमानदारी से सोंचे तो पायेंगे की इस महान समस्या को फैलाने वाले कोई और नहीं अपितु हमारे बड़े ही है, समाज में गिरती नैतिकता केवल पतन का ही नहीं बल्कि बड़ो की असफलता का भी प्रतीक है। अपने बच्चों को अच्छे संस्कार और शिक्षा देने के बजाय उनके हाथों में लैपटाप और इण्टरनेट थमा दिया और जहाँ बड़े हुए नहीं कि मंहगे मोबाइल और गाड़ियॉ दिला दी और समझ लिए की हमने अपना फर्ज पूरा कर दिया। एक बच्चा कोरे कागज की तरह होता है और उस कागज पर नैतिक मूल्यों और अच्छी आदतों की तहरीर लिखना माता–पिता का फर्ज है, पर माता–पिता अपनी निजी जिन्दगियों में ही इतने व्यस्त हो गये कि ये भूल ही गये कि वे किसी के माता–पिता भी हैं, अपनी व्यस्तताओं में इस बात का ध्यान ही नहीं रहा कि उनके बच्चों की देश की अगली पीढ़ी की असली जरूरत क्या है ? कल राष्ट्र की कमान युवाओं के हाथ में होगी, क्या संभालेगें देश को जो खुद को ही नहीं संभाल सकते, गहरी नींद से जागने का वक्त अब आ चुका है। जरूरत है युवाओं पर दोष मढ़ने के बजाय बड़े इस ओर कुछ सार्थक कदम उठाये ज्यादा से ज्यादा वक्त अपने बच्चों के साथ युवाओं के साथ व्यतीत करें, उन्हें उचित मार्गदर्शन दें, देश के सांस्कृतिक गौरव से अवगत करायें और युवाओं को भी आवश्यकता है समझने की अपने आप को और अपने देश को पाश्चात्य रंगने के बजाय अपनी पहचान बनाने के प्रयत्न करने होंगे .....।

अन्त में यही कहना चाहूँगा और आशा करता हूँ कि अगर मन के किसी कोने में देश के प्रति लगाव और नैतिकता की एक चिंगारी भी मौजूद होगी तो वह ज्वाला का रूप लेगी। ए युवाओ–

कब तक तुम भ्रमित रहोगे, उनके भरोसे

जो करते भ्रमित, खुद भी रहते भ्रमित

तोड़ो भरमों को और आगे बढ़ो तुम

ये गुलशन गुलजार हो जायेगा।